Indian J. Soc & Pol. 03(01): 2016:81-86 **ISSN 2348-0084 (P)**
ISSN 2455-2127 (O)

छात्र असंतोष के कारण और उनके निवारण के उपायः भारतीय संदर्भ में विश्लेषण

रजनीकान्त श्रीवास्तव[1]
[1]सहा0 प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान विभाग, आर0एम0पी0स्नातकोत्तर महाविद्यालय,सीतापुर।

ABSTRACT

गत कई दशकों से छात्रों में असन्तोष, अनुशासनहीनता और हिंसात्मक आन्दोलन की प्रवृत्तियां तेजी से बढ़ रही हैं। छात्र असंतोष एक राष्ट्रव्यापी समस्या बन कर उभर रहा है। शिक्षा–प्रांगण, शैक्षिक वातारवण, स्वंय छात्र तथा सम्पूर्ण समाज इस समस्या से प्रभावित है। यह शोध पत्र छात्र–असंतोष समाजिक आर्थिक राजनैतिक शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक कारणों का विश्लेषण करते हुए छात्र–असंतोष को नियंत्रित करने के उपाय का प्रयास करता है।

KEYWORDS: *छात्र , छात्र असंतोष, अनुशासन, छात्र आन्दोलन*

गत कई दशकों से छात्रों में असन्तोष, अनुशासनहीनता और हिंसात्मक आन्दोलन की प्रवृत्तियां तेजी से बढ़ रही हैं। छात्र असंतोष एक राष्ट्रव्यापी समस्या बन कर उभर हा है। शिक्षा–प्रांगण, शैक्षिक वातारवण, स्वंय छात्र तथा सम्पूर्ण समाज इस समस्या से प्रभावित है। आन्दोलन, घेराव, पथराव, तोड़–फोड़, हड़ताले, तालाबन्दी, कक्षाओं एवं परीक्षाओं का बहिष्कार तथा शिक्षकों तथा प्रशासनिक अधिकारियों के साथ दुर्व्यवहार, छात्र असन्तोष तथा अनुशासनहीनता के कुछ ज्वलन्त उदाहरण हैं। इस असन्तोश तथा अनुशासनहीनता ने शिक्षा व्यवस्था को अस्त–व्यस्त कर दिया है, जिसका प्रतिफल समाज को भुगतान पड़ रहा है।

छात्र राजनीति और छात्रों की स्रंजनात्मक व विध्वंसात्मक प्रवत्ति के अध्ययन पर अनेक शोधकर्ताओं ने रूचि दिखाई है। छात्र राजनीति पर एम पांडे द्वारा किया गया शोध ***"लीडरशिप ओरियन्टेशन अमन्ग कालेज स्टूडेन्टस्" (पी–एच0डी0 मगध विश्वविद्यालय, 1983)*** महत्वपूर्ण है जिसका उद्देश्य उन सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिवर्ती तथ्यों को खोजना है जो विशेष प्रकार के नेतृत्व हेतु उत्तरदायी है। शोधविधि हेतु नेतृत्व उन्मुख प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। नगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्रों के 673 कालेज छात्रों को चयनित किया गया। छात्र विभिन्न प्रकार के सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के थे। शोध में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

1. छात्र स्तर पर नेतृत्व उन्मुखता का आयु से कोई सम्बन्ध नहीं होता। छात्रों की अपेक्षा छात्रायें अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण उन्मुख नेतृत्व की ओर आकर्षित होती है।

2. उच्च जाति परन्तु निचले सामाजिक–आर्थिक वर्ग के छात्रों में प्रजातान्त्रिक उन्मुखता का स्तर निचली जाति व उच्च मध्यम आय वर्ग के छात्रों की अपेक्षा कम होता है।

3. आस्तिक की अपेक्षा नास्तिक नेतृत्व हेतु अधिक क्रियाशील होते है।

4. नगरीय छात्रों में ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक नेतृत्व की भावना होती है।

5. उच्चस्तरीय नेतृत्व उन्मुख छात्रों में परिवर्तन, विद्रोह तथा विरोध की भावना अधिक होती है।

इसी प्रकार का शोध एम0 अग्रवाल ने किया। उनके शोध ***ए स्टडी आफ लाइफ स्ट्रसस् अमन्ग यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स, (पी–एच0डी0 इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1985)"*** का उद्देश्य तनाव के कारण तथा उनके प्रभावों का परीक्षण करना, वांछनीय घटनाओं की अपेक्षा अवांछनीय घटनायें तनाव से अधिक सम्बद्ध क्यों होती है।पता लगाना था। जिसके कारण विद्यार्थी प्रायः सामूहिक रूप से विद्रोह करते है। शोध कार्य हेतु स्नातक व परास्नातक कक्षाओं के 675 विश्वविद्यालय छात्रों को चयनित किया गया। खोजकर्ता ने 'छात्र तनाव परीक्षण स्केल' निर्मित किया। सम्बन्धित तकनीक द्वारा आधार सामग्री का विश्लेषण किया गया।

शोध–कार्य के महत्वपूर्ण निष्कर्ष हैः

1. जीवन की घटनाओं का तनाव पर आनुपातिक प्रभाव पड़ता है। परन्तु सब घटनाओं का नही वरन् अवांछनीय घटनाओं का अधिक प्रभाव पड़ता है। अवांछनीय घटनाओं में भी उन घटनाओं का अधिक प्रभाव पड़ता है जो छात्र के अहं (ईगो) व आत्म–सम्मान को चुनौती देती है। पारिवारिक समस्याओं तथा अध्ययन का प्रतिकूल वातावरण भी तनाव पैदा करता है।

2. दिन प्रतिदिन की समस्याये भी तनाव पैदा करती है।

3. पुरूषों में महिलाओं की अपेक्षा तनाव का अनुपात अधिक होता है। इसी प्रकार मुसलमानों में हिन्दुओं की अपेक्षा, ग्रामीण छात्रों में नगरीय छात्रों की अपेक्षा, हॉस्टल, किराये के कमरे में रहने वाले छात्रों में घर पर रहने वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक तनाव रहता है।

भारत में छात्र–असन्तोष का स्वरूप दो प्रकार का रहा है (1) सकारात्मक या रचनात्मक व (2) नकारात्मक या विध्वंसात्मक। भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन, 1962 में चीन द्वारा आक्रमण, बांग्लादेश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में छात्रों की सक्रिय भूमिका उनके सकारात्मक असन्तोष के उदाहरण है। परन्तु

1: Corresponding Author

वर्तमान में छात्र–असन्तोष का स्वरूप सामान्यतः नकारात्मक तथा विध्वंसात्मक ही हैं कारण स्पष्ट है–विश्वविद्यालयों के छात्रावास असामाजिक तत्वों के अड्डे बन गये हैं। भ्रष्ट राजनेताओं एवं राजनीतिक दलों द्वारा अपने तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति हेतु छात्रों को मोहरा बनाया जाता है। वर्तमान राजनेताओं की कथनी व करनी में अन्तर है। नैतिकता की बातें करते हैं और स्वंय तस्करों, अपराधियों और समाज विरोधी तत्वों से सम्बन्ध रखते है।

इसके अतिरिक्त समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्याय,शोषण व उत्पीड़न से भी युवावर्ग उद्वेलित है। यही नही शिक्षा नीतियां एवं शिक्षा व्यवस्था भी छात्र–असन्तोष को उत्पन्न कर रही है। शिक्षक तथा शिक्षक संस्थायें अपने नैतिक मूल्यों और आदर्शों से विचलित हो गयी है और छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे नैतिक मूल्यों और आदर्शो का अनुपालन करें।

छात्र–असंतोष की अवधारणा :

असंतोष का अभिप्राय 'अशान्त स्थिति' है। यह मोह भंग तथा नाराजगी की अवस्था है। असंतोष की अभिव्यक्ति उस समय होती है जब समाज तथा शिक्षण संस्थाओं के मापदण्ड छात्रों की दृष्टि में अप्रभावी और हानिकारक हो जाते है तथा उन्हें निर्धारित मानदंडों में परिवर्तित करने की आवश्यकता प्रतीत होने लगती है। छात्र असंतोष अनुशासनहीनता तथा विरोध का रूप ले लेता है।

1. विरोध की मूल प्रवृति जन्मजात होती है। यह एक चित्तवृत्ति, मानसिक एवं भावनात्मक स्थिति है। इसका प्रदर्शन अनेक रूपों में हो सकता है– पुनर्विचार के रूप में, प्रार्थना अथवा शिष्ट आपत्ति के रूप में। लिखित अथवा मौखिक विरोध भी हो सकता है। किसी कृत्य अथवा विचार को दृढ़ता ने नकारना हो सकता है और अपने चरम रूप में हिंसात्मक हो जाता है। यही चित्तवृत्ति जब सामूहिक स्तर पर प्रकट होती है तो एक बड़े विद्रोह अथवा आन्दोलन का स्वरूप ले लेती है। हिंसात्मक विरोध के पीछे मानव की आंतरिक एवं बाध्यकारी शक्ति छिपी रहती है। यह उसकी मानसिक एवं शारीरिक क्षमता होती है। इस शक्ति को यदि संरचनात्मक शक्ति का रूप दे दिया जाये तो यही शक्ति व्याप्त विसंगतियों का उपचार बन सकती है। (राजकिशोर,2001,43–44)

हार्टन एवं हण्ट ने प्रत्येक आन्दोलन के विकार के पाँच चरणाों का उल्लेख किया है। ये (1) असंतोष की अवस्था, (2) उत्तेजनापूर्ण अवस्था, (3) औपचारीकरण की अवस्था, (4) संस्थाकरण की अवस्था, (5) समापन की अवस्था(जैन,2003,19)

छात्र असंतोष के कारण

जोसफ डीबोना ने उत्तर प्रदेष में एक विश्वविद्यालय में छात्रों के आन्दोलनों का अध्ययन किया तथा छात्र–असंतोष के तीन कारण बताये– 1. आर्थिक कारण, 2. सामाजिक–मनोवैज्ञानिक कारण व 3. राजनीतिक कारण।(लिपसेट,1967) अध्ययन की सुविधा हेतु निम्नाकिंत पाँच भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. समाजिक कारण
2. आर्थिक कारण
3. राजनैतिक कारण
4. शैक्षिक कारण
5. मनोवैज्ञानिक कारण

सामाजिक कारण

शिक्षा प्रांगणो में व्याप्त असंतोष एक सामाजिक समस्या बन गई है अतः वर्तमान सामाजिक परिवेश में इस समस्या का विश्लेषण आवश्यक है। उपनिवेशवाद और सामन्तवाद का स्थान प्रजातान्त्रिक व्यवस्था ने ले लिया है। परिणामस्वरूप पुरानी सामाजिक संरचना की चूलें हिल गई है। संविधान द्वारा भारतीय समाज प्रजातान्त्रिक है, धर्मनिरपेक्ष है और समाजवाद के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है।

विगत 60 वर्षो से सामाजिक परिवर्तन की अनेक प्रक्रियायें सामाजिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्यरत है। 1991 के बाद वैश्वीकरण तथा उदारीकरण के कारण जो परिवर्तन आया है उसका प्रभाव बहुत बड़े पैमाने पर भारतीय समाज पर पड़ रहा है। दीपांकर गुप्ता ने अपनी पुस्तक **मिस्टेकन मोडरनिटी** (गुप्ता,2000) में आधुनिकता के प्रश्न पर फैली गलतफहमियों को दूर करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार वह मात्र पश्चिमी संस्कृति का नशा नही है वरन् सामाजिक सम्बन्धों का एक नया स्वरूप भी है।

परन्तु आधुनिकीकरण ने भारतीय समाज में अनेक नई समस्याएं पैदा कर दी हैं अब विभिन्न जातियाँ तथा धार्मिक समूह अपनी पहचान पर जोर देने लगे है। युवा वर्ग की महत्वाकांक्षायें बढ़ गई है। महात्वाकांक्षायें पूरी न होने पर युवा वर्ग में गम्भीर असंतोष है। परम्परागत मूल्यों का तेजी से पतन हुआ है। सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट आई है। योगेन्द्र सिंह कहते हैः "आधुनिकीकरण का हमारे मूल्यों, सांस्कृतिक व्यवहारों, परिस्थितिकी और मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता पर ऐसा प्रभाव पड़ा है कि इसका परिणाम हमारे लिए विध्वंसकारी होगा।"

सामाजिक मान्यताओं को लेकर पुरानी तथा नूतन पीढ़ी के व्यक्तियों में वैचारिक मतभेद दिखाई देता है। सामाजिक संक्रमण की स्थिति में युवा वर्ग अपने को समायोजित नहीं कर पा रहा है। कुसमायोजन की स्थिति में व्यक्ति में तनाव, असंतोष और असुरक्षा की भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक है। विद्यार्थी समाज इसी सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न अंग है, वह इससे बच नहीं सकता। हमें ध्यान रखना होगा कि कालेज राजनीतिक समाजकरण के प्रमुख अभिकरणों में एक है। आज का नवयुवक छात्र परम्परागत सामाजिक व्यवस्था का आलोचक है जिसका आभास उसके कार्य, व्यवहार तथा सोच से परिलक्षित होता है। आज का छात्र चाहता है कि समाज उसे मान्यता दे, उसकी शक्ति का सम्मान करे, उस पर विश्वास करें, उसके साथ समानता का व्यवहार हो, उसे भी दायित्वपूर्ण कार्य सौपें जायें। ऐसा न होने पर आक्रोश, असंतोष व अनुशासनहीनता की

प्रवृत्तियां जागृत होती हैं जो छात्र आन्दोलन का रूप ले लेती है।

अनुसूचित जातियों और जनजातियों में इसलिए आक्रोश है कि आरक्षण व्यवस्था का पूर्ण रूप से पालन नही हो रहा है। उन्हे सामाजिक असमानता का सामना करना पड़ रहा है। उच्च जाति के छात्र उन्हे निम्न दृष्टि से देखते है। दूसरी ओर आरक्षण के परिणामस्वरूप उच्च जातियों के विद्यार्थियों के मन में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के प्रति द्वेष है क्योकि शैक्षिक योग्यता के मापदण्ड भिन्न–भिन्न है।

आरक्षण के मुद्दे का लाभ उठाकर सत्ता के गलियारे में पहुँचने वाले नेता आज छात्रों की भावनाओं से खेल रहे हैं तथा आरक्षण के समर्थन में उन्हे आन्दोलन करने को प्रेरित करते है। इस सम्बन्ध में पूर्व सांसद राजनाथ सिंह सूर्य का लेख समयानुकूल है। उन्होनें लिखा है : "ज्यों–ज्यों आरक्षण को अधिकार के रूप में इस्तेमाल करने का दबाव बढ़ता जा रहा है, त्यों–त्यों वंचित लोगों में हक के लिए सड़क पर उतरने की मानसिकता गहराती जा रही है।..... यह एक सामाजिक समस्या के रूप में विकराल होती जा रही है, जिसका समाधान समाज को ही करना है। आवश्यकता आरक्षण की परिधि बढ़ाने की नहीं उसे घटाने ओर पात्रता का मापदण्ड योग्यता को बनाने की है।"(रिपोर्ट ऑफ एजुकेशन कमीशन 1964–66, 650)

1.आर्थिक कारण

भारतीय समाज में व्याप्त आर्थिक विषमतायें, अभावग्रस्त जीवन, बढ़ती महंगाई तथा शिक्षित बेरोजगार की बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणामों को देखकर छात्र समुदाय अशान्त, चिन्तित, निराश तथा तनावपूर्ण है। महंगी शिक्षा और सीमित आय में सामान्य परिवार के विद्यार्थी अपने शैक्षिक संसाधन जुटाने और पढ़ाई करने में असमर्थ है। प्रतिभा, क्षमता और इच्छाशक्ति होते हुए भी धनहीनता के कारण न जाने कितने विद्यार्थियों का विकास अवरूद्ध हो जाता हैं अनुकरण तथा हीनता की प्रवृत्ति तथा आवश्यकताओं का पूरा न हो पाना आदि ऐसी परिस्थितियाँ है जिनके कारण विद्यार्थियों में असंतोष, निराशा तथा हीनता की भावना उत्पन्न होने लगती है, प्रतिक्रियास्वरूप वे अनुशासनहीनता व्यवहार करते हैं तथा अनैतिक व असामाजिक कार्यो में लिप्त हो जाते है।

"शिक्षा स्फीति" के कारण मांग की तुलना में शिक्षित व्यक्तियों की आपूर्ति कहीं अधिक है। डिग्री–डिप्लोमा लेकर अनेकों युवक आर्थिक स्वावलम्बन की तलाश में भटक रहे है, उनके पास कार्य नही है। शिक्षित–बेरोजगारी और अनिश्चित भविष्य की आशंका असन्तोष और अनुशासनहीना को जन्म देती है। जब व्यक्ति को उसकी शैक्षिक योग्यता के अनुरूप कार्य नही मिलता, अर्थात् उसका शैक्षिक अवमूल्यन होता है, ऐसी परिस्थितियाँ भी अनुशासनहीनता को जन्म देती है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अपने वार्षिक प्रतिवेदन में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि वर्तमान शिक्षा बहुत तबाही और गतिहीनता उत्पन्न कर रही है। हमारी शिक्षा प्रणाली अप्रासंगिक है, वह राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप नही है। कोठारी कमीशन (1964–66) ने भी स्वीकार किया है कि वर्तमान शिक्षा के विषयों और राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों के मध्य एक चौड़ी खाई है।

यहाँ हम शिक्षित बेरोजगारी के कुछ प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालेंगे–

1. शिक्षा का और विशेषकर उच्च शिक्षा का असन्तुलित और अविवेकपूर्ण प्रसार।
2. अर्थहीन, सिद्धान्तपरक, अप्रासंगिक पुरातन पाठ्यक्रमों का प्रचलन।
3. व्यावहारिक एवं व्यवसायपरक शैक्षिक सुविधाओं का सर्वसुलभ न होना।
4. विश्वविद्यालयों में व्यावसायिक मार्गदर्शन एवं परामर्श की पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध न होना।
5. स्वरोजगार के अवसरों एव संसाधनों की कमी।
6. पढ़े–लिखे नवजवानों में श्रम साध्य कार्यो के प्रति हीन दृष्टिकोण।
7. शैक्षिक नियोजन और आर्थिक एवं औद्योगिक नियोजन के बीच तालमेल न होना।
8. राष्ट्रीय औद्योगिक विकास की मन्दगति एवं प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण समुचित उपयोग न करने से शिक्षित बेरोजगारी बढ़ी है।
9. जनसंख्या बृद्धि और पारिवारिक गरीबी भी शिक्षित बेरोजगारी का एक महत्वपूर्ण घटक रही है।
10. व्यक्ति की शैक्षिक योग्यता, रूचि, क्षमता और इच्छा के अनुरूप वैतनिक कार्य सुलभ न होने पर वह बेरोजगारों की पंक्ति में खड़ा हो जाता है। अर्थात् अपेक्षित मजदूरी और पद न मिलने के कारण व्यक्ति बेरोजगारी की स्थिति में आ जाता है।

2.राजनैतिक कारण

वर्तमान में कालेज व विश्वविद्यालयों में शैक्षिक वातावरण को दूषित करने में अहम् भूमिका राजनैतिक दलों व राजनेताओं की है। प्रायः सभी प्रमुख छात्र संगठन किसी न किसी राजनैतिक दल से जुड़े है। उदाहरणस्वरूप– नेशनल स्टूडेन्ट्स यूनियन ऑफ इंडिया, कांग्रेस से, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारतीय जनता पार्टी से, आल इंडिया स्टूडेन्ट्स फेडरेशन तथा स्टूडेन्ट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, वामपंथी दलों से सम्बद्ध है। यही नही स्थानीय व प्रान्तीय स्तर पर राजनैतिक दल विद्यार्थियों में सक्रिय है। राजनैतिक दल विद्यार्थियों के माध्यम से अपनी विचारधारा का प्रचार–प्रसार महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में करते है इस कार्य के लिए छात्र नेताओं को धन तथा बल से सहायता दी जाती हैं इस प्रकार शिक्षण संस्थाओं में राजनैतिक दलबन्दी कराने और उसके माध्यम से महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय परिसर में अशान्ति उत्पन्न कराने, हड़ताल कराने, तोड़–फोड़ कराने का दायित्व राजनैतिक दलों को ही जाता है।

यह सच है कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में विद्यार्थियों की भूमिका अहम रही है। यह भी सच है कि स्वतन्त्रता उपरान्त कई अवसरों पर विद्यार्थियों ने जनहित हेतु आन्दोलन किए। परन्तु वर्तमान में परिस्थितियां बिल्कुल बदल गयी है। विद्यार्थियों के अधिकतम आन्दोलन राजनैतिक दलों से प्रेरित व समर्थित होते हैं जिनमें जनहित की भावना का अभाव होता है। यह दलगत राजनीति का ही परिणाम है कि शिक्षण संस्थाओं में जाति, सम्प्रदाय, धर्म, क्षेत्रवाद, भाषा, आरक्षण के प्रश्न पर आन्दोलन कराये जाते हैं। भ्रष्टाचार तथा अनैतिकता की जड़े महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों तक फैल गई हैं।

राजनेता छात्रों को उस समय हतोत्साहित भी करते है जब वे सक्रिय राजनीति में कूदना चाहते हैं। "राजनीति पर कुंडली जमाए बैठे मठाधीशों को छात्रों की सक्रिय राजनीति में भागीदारी नहीं भाती। छात्र इन नेताओं के गुण–दोषों की व्याख्या जो करने लगते हैं। दूसरों को सबक सिखाने और अपनी गन्दी राजनीति को सफल बनाने में ही छात्रों का उपयोग होता रहा है। छात्रों को जब आगे बढ़ाने का अवसर आता है, तो उन्हें पीछे धकेल दिया जाता है।"(क्रानिकल,2007,50) उ0प्र0 विधान सभा चुनाव–2007 ने सिद्ध कर दिया कि राजनैतिक दल किस प्रकार छात्र नेताओं की उपेक्षा करते है।

4. शैक्षिक कारण

प्रायः शिक्षाविदों की यह धारणा है कि प्रचलित अप्रासंगिक, भ्रामक, अव्यावहारिक और जीवन से कटी हुई शिक्षा प्रणाली ही छात्र–असंतोष के लिए उत्तरदायी है। यह नवयुवकों को आत्मनिर्भर बनाने और श्रम के प्रति श्रद्धा जागृत करने में असमर्थ रही है।

जिस देश की शिक्षा प्रणाली कोरी सैद्धान्तिक, निरूद्देश्य और अव्यावहारिक होगी उस देश के नौजवानों में असंतोष उत्पन्न होना स्वाभाविक है। शिक्षाविद् हुमायूँ कबीर ने भी छात्रों की अनुशासनहीनता का एक महत्वपूर्ण कारण अनुपयोगी शिक्षा प्रणाली को बताया है। छात्र असंतोष उत्पन्न करने के लिये शिक्षा की निम्नांकित प्रवृत्तियाँ जिम्मेदार हैं–

1. उद्देश्यविहीन उच्च–शिक्षा
2. सीमित एवं अनुपयोगी पाठ्यक्रम
3. परम्परागत शिक्षण विधियाँ विशेषकर व्याख्यान विधि का अधिक उपयोग
4. कक्षाओं मे छात्र संख्या की अधिकता
5. शिक्षकों और विद्यार्थियों में आत्मीयता का अभाव
6. छात्रों की समस्याओं का समय पर समाधान न होना
7. निर्देशन एव परामर्श सेवाओं का अभाव
8. छात्र–क्रियाओं एवं अतिरिक्त पाठ्यसहगामी क्रियाओं की उपेक्षा
9. बेरोजगारी की समस्या
10. छात्र संघो एवं राजनीतिक दलों का विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्रशासन एवं अन्य क्रिया–कलापों में हस्तक्षेप
11. जीवन के नैतिक मूल्यों का पतन व
12. कामुक एवं अभद्र मनोरंजन के साधनों का बाहुल्य

शिक्षा आयोग (1964–65) ने अपने प्रतिवेदन में कहा है कि छात्र असंतोष का प्रमुख कारण शिक्षा का राष्ट्रीय विकास से सम्बन्ध न होना। इसका दायित्व किसी एक पक्ष पर न होकर सभी पक्षों पर है। "जब तक प्रत्येक एजेन्सी–छात्र, माता–पिता, शिक्षक, राज्य सरकारें और राजनीतिक दल अपना दायित्व नहीं निभाते है, समस्या का समाधान सम्भव नहीं।"(इंडिया टी0 वी0 मार्च 2007)

उत्तर प्रदेश में स्ववित्तपोषित कालेजों का तीव्रता से विकास हो रहा है। आज उच्च शिक्षा के निजीकरण से शिक्षण संस्थाओं के रूप सें दुकानें खोलने का मार्ग प्रशस्त कर दिया गया है। स्थिति इतनी भयानक है कि तीन–चार कमरों में डिग्री कालेज चल रहे हैं। मानकों की अनदेखी की जा रही है। यही नहीं अनुमोदित कालेजों में भी स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम धांधलेबाजी के शिकार हैं। ऐसे कालेज विद्यार्थियों से मोटी रकम वसूल करते है। अतः अभिभावकों तथा विद्यार्थियों में रोष स्वाभाविक है।

5. मनोवैज्ञानिक कारण

विद्यार्थी महत्वाकांक्षी होता है। वह प्रतिष्ठा तथा प्रगति चाहता है। परन्तु आज के विकासात्मक भौतिकवादी युग में जहाँ उपयोगितावाद बढ़ रहा है, एक साधारण परिवार का विद्यार्थी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक दबाव से ग्रस्त है। जहाँ एक ओर उसकी आवश्यकताओं और उपेक्षायें लगातार बढ़ती जा रही है, वहाँ दूसरी ओर उसकी पूर्ति करने में वह असहाय व अक्षम है। ऐसी स्थिति में उसमें निराशा, असंतोष और असामजंस्य बढ़ता है संवेग उग्र रूप धारण करते हैं, उसमें आन्दोलनकारी व विध्वंसक प्रवृत्तियाँ जाग्रत हो जाती है।

आज देश के युवाओं पर केवल टी0वी0 और सिनेमा पर दिखाई जा रही हिंसात्मक और अश्लील दृश्यों का बुरा प्रभाव पड़ रहा है। पत्र–पत्रिकाओं में जो कहानियाँ छपती हैं उसकी भी थीम घूम–फिर कर नारी की देह पर सीमित हो जाती है।(शर्मा,2007,102) काव्य में भी अब काम वासना की प्रधानता हो गई है। **इंडियन लॉफ्टर चैलेंज शो** में अश्लीलता से भरपूर चुटकुले सुनाए जाते है। कालेज में युवक कन्याओं के साथ खूब छेड़छाड़ करते है। रैगिंग के नाम पर यौन शोषण होता है।(अमर उजाला,11 मार्च 2007)

यद्यपि उच्चतम न्यायालय ने अपने निर्णय में शिक्षक–छात्रा रिश्ते की व्याख्या करते हुए उनके मध्य रजामन्दी से प्रेम सम्बन्ध को नाजायज नहीं कहा है,(हिन्दुस्तान,31अगस्त 2007) परन्तु इससे विद्यार्थियों के मन पर दूषित प्रभाव पड़ता है। शिक्षक तथा छात्रा के मध्य प्रेम सम्बन्ध सदैव ही सामाजिक वर्जना की परिधि में आता है। ऐसी घटनाओं से समाज में आक्रोष भड़का है, विद्यार्थियों ने इसके विरूद्ध आन्दोलन किए है। पटना (बिहार) के एक शिक्षक मटुकनाथ और उनकी शिष्या

के बीच प्रेम सम्बन्धों तथा मटुकनाथ द्वारा उसे आदर्श की परिधि में लाने से समाज में उनके विरूद्ध उत्तेजना फैली। इसी प्रकार मेरठ की शिक्षिका कविता चौधरी की घटना ने मुलायम सिंह सरकार को हिला दिया।

सम्पन्न घरों के छात्र/छात्राएं इंटरनेट से गुगल सर्च की वेबसाइट द्वारा असली संसार में पहुँच जाते है। एक समाचार के अनुसार "उत्तर प्रदेश टेक्नीकल यूनिवर्सिटी की वेबसाइट पर छात्रों लिए अश्लील संसार खुल रहा है।"(रिपोर्ट ऑफ एजुकेशन कमीशन 1964–66, 650)

छात्र–असंतोष को नियंत्रित करने के उपाय

छात्र–असंतोष के कारणो का पूर्ण उन्मूलन नहीं किया जा सकता। तो फिर छात्र असंतोष को कैसे कम किया जायें? शिक्षाविदो एंव शिक्षा समितियों(अमर उजाला 13 सितम्बर 2007) द्वारा भी समय–समय पर सुझाव दिये जाते रहे है। छात्र–असंतोष को नियंत्रित करने के लिये निम्नाकिंत सुझाव दिये जा सकते है–

1. शिक्षा व्यवस्था में सुधार करके उसे उद्देश्यपरक, सार्थक, प्रासंगिक और व्यावहारिक बनाया जाये। शिक्षा का स्वरूप परिवर्तित सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप हो। शिक्षा को राष्ट्र की विकास योजनाओं और उत्पादकता से सम्बद्ध किया जाये।
2. उच्च शिक्षा संस्थाओं में योजनाबद्ध ढंग से छात्रों को प्रवेश दिया जाये। सामान्य लोगों के लिये उच्च शिक्षा की व्यवस्था मुक्त विश्वविद्यालय में की जाये। प्रवेश परीक्षा और साक्षात्कार के माध्यम से उच्च शिक्षा मे प्रवेश दिया जाये। इससे असामाजिक तत्वों के प्रवेश पर रोक लगेगी, और अनुशासनहीनता की समस्या को नियंत्रित करना सम्भव होगा।
3. प्रचलित पाठ्यक्रमों में संशोधन एवं परिवर्तन किया जाये। पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनो पक्षों का समावेश किया जाये।
4. शिक्षा संस्थाओं में छात्रों का वैयक्तिक, शैक्षिक एव व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श देने की समूचित व्यवस्था की जाये। इस व्यवस्था से छात्रों के वैयक्तिक, भावात्मक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं के समाधान में सहायता दी जा सकती है।
5. छात्र अनुशासनहीनता का एक प्रमुख कारण प्रचलित परीक्षा प्रणाली है। अतः परीक्षा प्रणाली में संशोधन एवं परिवर्तन करना आवश्यक है। सेमेस्टर सिस्टम एवं ट्राईसेमेस्टर सिस्टम लागू किया जाये, प्रश्न बैंक बनाया जाये, आन्तरिक मूल्याकंन एवं ग्रेडिंग सिस्टम लागू किय जाये तथा छात्रो को ग्रेड सुधार के अवसर दिये जायें। प्रत्येक छात्र के वर्ष भर के कार्य का संचित अभिलेख तैयार किया जाये, ग्रेड देते समय उसे भी ध्यान मे रखा जाये।
6. शिक्षा संस्था के प्रशासन को स्वच्छ बनाया जाये, उसमें पारदर्शिता हो। संस्था के उन सभी कार्यक्रमों एवं निर्णयों मे छात्रों को समान रूप से सहभागी बनाया जाये, जिनका सम्बन्ध सीधे छात्रों से हो जैसे प्रवेश नीति , शुल्क मुक्ति, पुस्तकालय की व्यवस्था एवं क्रीड़ा व्यवस्था आदि। शिक्षक छात्रों का आदर्श नेतृत्व करें। शिक्षा संस्था का प्रशासनिक स्वरूप लोकतात्रिंक हो।
7. विश्वविद्यालय परिसर में नैतिक, मूल्यपरक कक्षाओं का विशेष आयोजन किया जाये। इन्हीं कक्षाओं के माध्यम से योग, रोवरिंग, एन0एस0एस0 एवं एन0सी0सी0 आदि के उद्देश्यों पर प्रकाष डाला जायें।
8. वर्तमान में छात्र–संघो की भूमिका संदिग्ध है। दूसरे शब्दों में वे राजनैतिक दलों के हाथ की कठपुतली बन गये हैं। छात्रों के कल्याण एवं हितों को ध्यान में रखते हुए छात्र संघो की कार्यपद्धति एवं नियमों में सुधार किया जाये।
9. विश्वविद्यालयों में छात्र–कल्याण सेवा कार्यक्रमों की व्यवस्था की जाये। छात्र–कल्याण के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर एक अधिष्ठाता नियुक्त किया जाये।
10. कभी–कभी शिक्षकों की गतिविधियाँ छात्र असंतोष का कारण बन जाते हैं जैसे शिक्षकों का राजनीति में प्रवेश। दलीय राजनीति करने वाले शिक्षक अपनी विचारधारा का प्रसार छात्रों में करते है। इससे छात्रों में अनुशासनहीनता बढ़ती है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सन् 1958 में नियुक्त समिति का विचार था कि शिक्षक राजनीति से अलग रहें और अध्यापकों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्रों की प्रथा समाप्त कर दी जाये।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय पर संसद की स्थायी समिति ने अपनी सितम्बर, 2007 की आख्या में यू0जी0सी0 की कार्यप्रणाली पर आक्षेप लगाया है। समिति ने कहा कि "आयोग उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा है। उच्च शिक्षा को मानकों के अनुरूप बनाने, शिक्षण एंव शोध की दिशा में आगे बढ़ने के बजाय यू0जी0सी0 सिर्फ अनुदान बांटने वाली संस्था बनकर रह गई है।"(वर्मा,1992,370)

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि युवा छात्र आज भारतीय लोकतंत्र की रीढ़ की हड्डी की भाति है। विश्व की सर्वाधिक युवा आबादी वाला देश होने का गौरव भारत को ही है। आगामी वर्षो में भारत को एक सुदृढ़ राष्ट्र के रूप में उभरने के लिए आवश्यक होगा कि युवा छात्रों की मानसिकता को बुद्धिजीवी, शिक्षाविद्, सरकार, राज्य नेता और देश के आमजन गहराई से समझने का प्रत्यन करें और समुचित तरीके से उन समस्याओं का निदान किया जाये ताकि युवा छात्रों की सकारात्मक ऊर्जा,उत्साह एवं उनकी सृजनात्मक शक्ति का देश के विकास में समुचित उपयोग किया जा सके। बिहार के पूर्व गवर्नर आर0आर0 दिवाकर का लेख "छात्र–अशांति की समस्या और उसका समाधान" आज के संदर्भ में बहुत उपयोगी है। उन्होनें लिखा है : "छात्रों तथा उनसे सम्बद्ध सभी व्यक्तियों को विचार करके निश्चय कर लेना चाहिए कि वे हिंसात्मक विचारों और कार्यो को तिलांजलि देंगे, जिससे जीवन और सम्पत्ति का नाश न हो। दुर्भाग्य से हमारे देश में ऐसे राजनीतिक गुण्डे तथा गुण्डा दल हैं, जो छात्रों, किसानों और मजदूरों द्वारा हिंसात्मक कार्यों का समर्थन करते हैं। छात्रों को इन तत्वों से सावधान

रहना चाहिए और उनके द्वारा दिखलाए गए आकर्षक भविष्य के चित्र से प्रभावित नहीं होना चाहिए। हिंसात्मक विचार, हिंसात्मक वचन और हिंसात्मक कार्य करने की मनोवृत्ति ही मानव जाति की प्रगति की बाधक है। छात्रों को इस तरह की मनोवृत्ति से मुक्त रह कर सृजनात्मक तथा लोकतान्त्रिक विचारों का साथ देना चाहिए। उन्हे तर्क तथा बुद्धि से कार्य लेना चाहिए। जो लोग मानव–जाति की प्रगति में रूचि रखते है, उन्हें छात्रों द्वारा लोकतान्त्रिक दृष्टिकोण अपनाने तथा हिंसा से दूर रहने में सहायता करनी चाहिए, ताकि मानवीय सम्बन्धो में सुधार आ सके। वस्तुतः छात्रों के लिए तात्कालिक कार्य यह है कि वे ऐसे प्रत्येक कार्य के विरूद्ध दृढ़ता का रूख अपनायें और अपना समस्त ध्यान शिक्षा प्राप्ति में केन्द्रित कर उसमें सफलता प्राप्त करें। इस दृष्टिकोण से सभी सम्बद्ध पक्षों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट होगा और अनुकूल परिणाम निकलेगा। अनुशासनहीनता और हिंसा से कुछ भी नही मिल सकता, ऐसे उचित दृष्टिकोण से सही सहानुभूति और स्नेह प्राप्त किया जा सकता है जो सभी प्रकार की सहायता और समर्थन के द्वार खोल देगा।

सन्दर्भ

सिंह, विनोद वीर (2001) : *"हिसंक विरोध का व्याकरण"* राजकिशोर (संपादक) *हिंसा की सभ्यता* स्वर्ण जयन्ती प्रकाशन, दिल्ली,

जैन,पी0सी0(2003): *सामाजिक आन्दोलन का समाजशास्त्र,* नेशनल पाब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,

जोसफ, डीबोना (1967): *इनडिसीपिलन एण्ड स्टूडेन्ट लीडरशिप इन एन इंडियन यूनिवर्सिटी,*

लिपसेट, एस0एम0 (सम्पादित)(1967): *स्टूडेन्ट पोलिटिक्स* ,बेसिक बुक्स, न्यूयार्क,

गुप्ता, दीपांकर 2000 :*मिस्टेकन मोडरनिटी*, हार्पर कालिन्स, नई दिल्ली,

रिपोर्ट ऑफ एजुकेशन कमीशन 1964–66,

सिविल सर्विसेज क्रानिकल, दिल्ली, जुलाई, 2007,

इंडिया टी0वी0, 31 मार्च, 2007

शर्मा, पवित्र कुमार (2007): *बलात्कार और यौनशोषण* , लक्ष्य भारतीय, दिल्ली

अमर उजाला, बरेली, 11 मार्च, 2007

हिन्दुस्तान, दिल्ली, 31 अगस्त, 2007

वर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद (1992) विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना,